International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 76-78

रीवा नगर निगम कार्यालय में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का समीक्षात्मक अध्ययन

नागेन्द्र कुमार वर्मा [1], डॉ0 गायत्री मिश्रा [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

कामकाजी महिलाओं के लिए वर्तमान में नगर निगम कार्यालय एवं विभिन्न क्षेत्रों में समस्याएँ एवं उत्पीड़न की समस्या एक जटिल पहलू है जबकि कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या का एवं उनके समक्ष एक चुनौती भरी जिम्मेदारी बच्चों से अलग एक ऐसी जगह पर व्यतीत होता है, जहाँ पर विभिन्न विचारधारा और भिन्न भिन्न स्वभाव के स्त्री पुरूष मिलते हैं। वह सबके साथ प्रेम और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण के साथ सामंजस्य बनाये रखना अति आवश्यक हो जाता है। बाहर की दुर्भावनाएँ जाने–अनजाने हमारे घर में घुस आती हैं और शान्ति के एक बसेरे को अक्रान्त कर देती है। खिलते हुए फूल की तरह बच्चे माता–पिता के गलत उदाहरणों को भी सीख लेते हैं और आगे चलकर उनके व्यक्तित्व का स्थाई अंश बन जाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में रीवा नगर निगम कार्यालय में कामकाजी महिलाओं की विभिन्न समस्याओं को प्रकाश में लाने के लिए कार्यालय के क्षेत्राधिकार अन्तर्गत रीवा नगर निगम के विभिन्न वार्डों में कार्यरत महिलाओं का क्षेत्रीय अध्ययन के द्वारा लिये गये साक्षात्कार पद्धति से अनेक समस्याएँ उभर कर आई है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि कामकाजी महिलाओं को स्वाभाविक रूप से दोहरे संसार में जीना पड़ता है। जिस कामकाज में वे लगी होती है उसी के आधार पर उसका दृष्टिकोण विकसित होता है, इसके ठीक विपरीत बच्चे किसी निश्चित दृष्टिकोण को लेकर चलने की अपेक्षा सभी ओर खुलना चाहते हैं। इसीलिए कभी–कभी माता–पिता और बच्चों के बीच किसी विषय पर मतभेद होता है, मतभेद के अवसरों पर कोई निर्णय करते समय माता–पिता को अपनी धारणा से चिपके नहीं रहना चाहिए, बल्कि परस्पर दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिए। कामकाजी महिलाओं एवं उनके पतियों को ऐसा हल ढूंढना चाहिए कि जो बच्चों को संतुष्ट करने वाला हो तथा उनके दिल–दिमाग में किसी भी प्रकार की कुण्ठा एवं दूषित विचार नहीं आने चाहिए।

मूल शब्द : रीवा, नगर निगम कार्यालय, कामकाजी महिलाएँ, समस्याएँ।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकासकाल क्रम में ''मानव अधिकार'' की अवधारणा एक अहम पड़ाव के रूप में विशेष महत्व रखती है। मानव अधिकार मानवीय प्रगति व सामाजिक विकास से सम्बन्धित ऐसे उत्कृष्ट अधिकार है, जो मनुष्य को न केवल मनुष्य के रूप में अपितु सम्पूर्ण समाज के सदस्य के रूप में सांस्कृतिक, नैतिक व भौतिक उन्नति के अवसर प्रदान करते हैं। मानव अधिकारों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव के आत्मसम्मान, गरिमापूर्ण जीवन व स्वतंत्रता से है। वस्तुतः मानव अधिकार स्वयं में अन्तर्निहित अपृथक्करणीय एवं वैश्विक है। मानव अधिकारों में मानव की संकल्पना में महिला व पुरूष दोनों अन्तर्निहित है, किन्तु यह कटु सत्य है कि सभ्य मानव समाज का आधा भाग आज भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है। महिलाओं के प्रति व्यवहार, पूर्वाग्रहों और भेदभाव पर आधारित होता है, वैज्ञानिक पारिवारिक व सामाजिक प्रत्येक स्तर पर महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष, अन्याय के विरोध में संघर्ष, शोषण, दमन व उत्पीड़न का सामना करने में संघर्ष करना पड़ रहा है।

नगरों, महानगरों, नगर निगम के कार्यालयों में इठलाती महिलाओं को देखकर महिलावादी विचार के समर्थक खुश होते हैं कि देखो महिला सशक्तीकरण सफल हुआ, इस सबसे पहला सवाल यह है कि क्या महिलाओं अथवा कार्यशील महिलाओं के लिए कामकाजी शब्द ठीक है, जीविकोपार्जन में संलग्न महिलाओं के लिए काम काजी महिला कहा जाता है, तो इसका अर्थ क्या यह है कि घर, परिवार अथवा संयुक्त परिवार में रहकर समस्त घरेलू एवं पारिवारिक जिम्मेदारी को पूर्णतः सम्हालने वाली महिलाएँ काम ही नहीं करती है, दरअसल यह विडम्बना ही है कि हमारे समाज में घर परिवार के काम को कभी अहमियत ही नहीं दी गई है, तो उसे उसका कर्तव्य और उसकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से जिम्मेदारी मानकर भुला दिया गया है, संयुक्त परिवार एवं घरों में काम की कितनी अहमियत होती है, नगरों एवं महानगरों में कामवाली के अभाव और नखरों से ही पता चल जाता है, वैसे यह पर प्रश्न ऐसी महिलाओं का है जो समाज में अपने घर, परिवार एवं संयुक्त परिवार के साथ साथ बाहर की भी जिम्मेदारी भी सम्हालती है। साथ ही घेरलू एवं पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वाहन करने के साथ–साथ कुटीर उद्योग, कृषि कार्य अन्तर्गत खेत खलिहानों में कार्य कर रही एवं दुग्ध व्यवसाय, पशुपालन आदि में लगी हुई है।

देश आजाद होने के बाद हमारे सामाजिक और आर्थिक स्तर में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण दौर लगभग पूरा हो चुका हैं प्रत्येक परिवार इस परिवर्तन से प्रभावित हुआ है। कहीं आर्थिक आधार पर संयुक्त परिवार टूटे हैं तो कहीं सामाजिक आवश्यकताओं के कारण परिवार के दृश्य बदले हैं। जो कामकाजी महिलाएँ घर की लक्ष्मी बनकर घर में बैठी रह जाती थी, वे अब कामकाज की तलाश में घर से मीलों दूर निकल गई है। समाज के विकास में कामकाजी महिलाओं की अब महत्वपूर्ण भूमिका पुरूषों से कम नहीं है जितने हाथों में काम मिला है उतनी ही प्रगति की रफ्तार तेज हुई है। लेकिन पुरूषों की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं की जबाबदारी बहुत अधिक हो गई है। घर की दुनिया आज भी कामकाजी महिलाओं के बिना शून्य है। मातृत्व की जिम्मेदारी अपने आप में एक चुनौती भरा

काम है, अपनी शिक्षा, नौकरी एवं विवाह तथा मातृत्व के बाद माता को बच्चों के लिए सुन्दर भविष्य की तैयारी करनी पड़ती हैं, यदि कामकाजी महिलाएँ बच्चों के अभ्युदय के लिए हर पल सजग हों तो बच्चों के साथ–साथ स्वयं उनके विकास का भी नया मार्ग खुलता है।[1]

यह निश्चय ही एक कटु सत्य है कि बदलते हुए परिवेश के साथ पुरूषों की मानसिकता में कामकाजी महिलाओं के सम्बन्ध में सार्थक बदलाव सभी जगह नहीं आया है। घर के कामकाज में महिलाओं के समान ही पुरूषों की भागीदारी बराबर की होनी चाहिए, जो नहीं है। कामकाजी महिलाएँ उपेक्षा का शिकार होती है, इन्हें दफ्तरों, कार्यालयों एवं विभिन्न संस्थाओं में पुरूषों की तुलना में पारिश्रमिक मापदड के निर्धारण में दुरूपयोग एवं भेदभाव की स्थिति निर्मित होने से कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न होती है।

कामकाजी महिलाओं के लिए पुरूषों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। महिलाओं के बच्चों के पाठ समय पर्याप्त देने के लिए अधिक से अधिक छूट प्रदान की जानी चाहिए, साथ ही नगर निगम एवं विभिन्न कार्यालयों में कामकाजी महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर ध्यान देकर उन्हें उत्पीड़न की समस्या का निदान होना चाहिए। साथ ही कामकाजी महिलाओं के जीवन की सफलता को मापने के लिए प्रमुख रूप से तीन बिन्दु है पहला विन्दु उनकी गृहस्थी कितनी व्यवस्थित है और सुचारू रूप से चलती है, दूसरा कामकाजी महिलाएँ अपनी नौकरी अथवा अपनी डयूटी के प्रति कितनी समर्पित भाव से जिम्मेदारी का निर्वाहन कर रही है तथा तीसरा बिन्दु कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों के जीवन के प्रति कितनी सजग और जिम्मेदारी का निर्वाहन करती है। ये तीनों ही बिन्दु एक दूसरे की पूर्ति करने वाले हैं। सुव्यस्थित घर के बच्चे न केवल सुव्यस्थित होते हैं अपितु सम्पूर्ण घर, परिवार एवं समाज की अभिव्यक्ति होते हैं। माता–पिता की आन्तरिक और बाह्य रूचियाँ बच्चों के द्वारा ही ठीक–ठीक व्यक्त होती है।[2]

व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति अन्तर्गत कामकाजी महिलाओं से लिये गये साक्षात्कार तथा नगर निगम के क्षेत्राधिकार अन्तर्गत सभी वार्डों से स्तरीयकृत देव निदर्शन विधि से प्रति चयनित 10–10 महिलाओं से लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त प्राथमिक सूचना से ज्ञात है कि कामकाजी महिलाओं के ऊपर कामकाज का दबाब रहता है जब वे महिलायें काम के बाद घर लौटती है तब भी वे उस दबाब से मुक्त नहीं होती है, कामकाजी महिलाओं के इस दबाब की परिणति कभी–कभी अपने घर में बच्चों के ऊपर क्रोध, डांट, फटकार, चिड़चिड़ाहट के रूप में व्यवहार करती हैं, बच्चों की समझ बहुत पैनी होती है, वे अपनी माँ की दुर्बलता बच्चों पर बार–बार व्यक्त होती है तो बच्चे प्रतिक्रिया विहीन और लगभग अपनी माँ के प्रति कुंठित हो जाते हैं।

कामकाजी महिलाओं से लिए गये साक्षात्कार से ज्ञातव्य है कि उनके बच्चे अपनी माँ से एक ही चीज की अपेक्षा रखते हैं और वह बेटा और बेटियों के प्रति निर्मल प्रेम। बच्चों की माँ के प्रति नैसर्गिक अधिकार है, बच्चे माता–पिता से प्रेम करते हैं, उनके कामकाज से नहीं किंतु यह सत्य है कि वे माता–पिता के दैनिक क्रियाकलापों के प्रति सचेत होते हैं, भले ही बच्चे कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करे परन्तु माता–पिता के अच्छे बुरे कार्यों की अमिट छाप उनके जीवन पर पड़ती ही है।

जिन कामकाजी महिलाओं का जीवन सरल और सादगीपूर्ण होता है, जो हमेशा प्रसन्न रहती है और अपने काम–काज का बोझ लेकर घर नहीं लौटती, ऐसी कामकाजी महिलाओं के बच्चे भी सरल स्वभाव एवं सादगीपूर्ण, प्रसन्न और खिले हुए होते हैं। कामकाजी महिलाओं का भी यह सम्पूर्ण दायित्व होता है कि वे अपने बेटा–बेटियों को भरपूर प्यार दें, उनकी शिक्षा के प्रति सजग और उनके व्यवहार के प्रति सहनशील हों, बच्चों के सामने हमेशा प्रेरक प्रसंग रखे तभी बच्चों का जीवन स्तर, शिक्षा–दीक्षा एवं चहुमुखी विकास संभव हो सकेगा तथा घर परिवार समाज एवं माता–पिता के प्रति बच्चों के मन में आदर सम्मान की भावना विकसित हो सकेगी।

ज्ञातव्य है कि मध्यप्रदेश के रीवा नगर में कामकाजी महिलाओं के विशेष संदर्भ में महिलाओं की परिस्थितियाँ संतोषजनक नहीं पायी गई है, महिलाओं का निम्न जीवन स्तर, अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के चलते शोषण एवं उत्पीड़न, पुरूष प्रधान समाज, सामन्ती प्रथाओं एवं मूल्यों, जातीय भेदभाव एवं जाति–पांत के आधार पर घटित सामाजिक ध्रुवीकरण, अशिक्षा एवं अल्पाधिक दरिद्रता के पर्याय स्वरूप देखा जाता हैं, यह एक कटु सत्य है कि रिमही समाज में बालिकाओं व महिलाओं का अनचाहा बोझ समझा जाता हैं, नगर में शिशु मृत्यु दर, आयु विशेष पर महिलाओं को अस्वस्थ्यता एवं मृत्यु शैक्षिक पहुंच एवं उपलब्धि, कार्य में सहभागिता स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, अपर्याप्त पोषाहार दूषित पाक पद्धति, गंदे हाथों से भोजन की प्रवृत्ति, नमी युक्त प्रदूषित आवास, कुपोषण जनति बीमारियों का प्रकोप, सकल पोषण क्षमता में कमी आदि परिस्थितियां नगर की कामाकाजी महिलाओं में ज्ञात हुई है।

''यह सर्वविदित है कि देश के अन्य राज्यों की तुलना में मध्यप्रदेश एवं राजस्थान की महिलाएँ निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य, दमन, सामाजिक भेदभाव दरिद्रता, एवं निर्बलता के भार से दबी हुई है। सामाजिक मूल्यों, प्रभावी कानून एवं प्रवर्तन प्रथाओं के अभाव में कामकाजी महिलाओं को एक गंभीर संक्रमण काल से गुजरना पड़ रहा है।''[3]

रीवा नगर निगम अन्तर्गत कामकाजी महिलाओं की विभिन्न परिस्थितियाँ एवं महिला उत्पीड़न की स्थिति का व्यक्तिगत शोध अध्ययन एवं अवलोकन किए जाने पर कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ उजागर होती है। नगर में 10 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ शहर की उन्नति एवं नगर के सभी 45 वार्डों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती हैं। यद्यपि जिले की ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत कामकाजी महिलाओं का एक महत्वपूर्ण व्यवसाय कृषि है, लगभग रीवा के ग्रामीण क्षेत्र की कार्यशील महिलाएँ 60 प्रतिशत कृषि श्रमिक के रूप में है, ये महिलाएँ कृषि एवं उससे सम्बद्ध व्यवसाय जैसे–खेत, खलिहान, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, साग–सब्जी उगाने में लगी है। अतः रीवा नगर निगम अन्तर्गत कामकाजी महिलाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित सारणी क्रमांक 1 की सहायता से किया गया है –

सारणी क्रमांक 1: रीवा नगर में संलग्न कामकाजी महिलाओं का वगीकरण, विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न महिलाओं का प्रतिशत, वर्ष (2017–18)

क्र.	क्रियाकलाप	कामकाजी महिलाओं का प्रतिशत
1.	कृषि	8.2
2.	उत्खनन	2.1
3.	विनिर्माण	11.2
4.	विद्युत जल	2.7
5.	निर्माण	10.4
6.	थोक खुदरा बाजार	17.8
7.	परिवहन	5.4
8.	वित्त	6.8
9.	सामुदायिक सेवाएँ	16.8
10.	अन्य	18.00
	कुल योग	100.00

स्रोत – नगर निगम कार्यालय, रीवा, जिला–रीवा मध्यप्रदेश (वर्ष 2017–18)

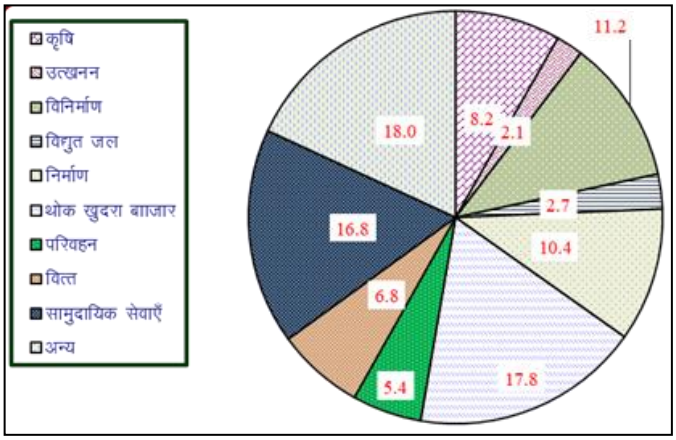

आरेख १: रीवा नगर में कामकाजी महिलाओं का प्रतिशत

रीवा नगर निगम अन्तर्गत सभी 45 वार्डों में विभिन्न कार्यों में संलग्न कामकाजी महिलाओं की स्थिति का उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी दर अन्य क्रियाकलापों में 18.0 प्रतिशत, थोक एवं खुदरा व्यापार में 17.8 प्रतिशत तथा सामुदायिक सेवाओं में 16.8 प्रतिशत पायी गई है। यद्यपि कामकाजी महिलाओं को काम के लिए बाहर जाना या घर में रखना, उनकी इच्छा व मर्जी पर निर्भर नहीं रहता, कामधंधे के लिए घर से बाहर निकलना उनकी विवशता है, साथ ही कामकाजी महिलाओं की दो श्रेणियाँ हैं, प्रथम संगठित क्षेत्र की श्रमिक महिलाएँ, द्वितीय असंगठित क्षेत्र की कामकाजी महिलाएँ, विभिन्न कार्यों में संलग्न पायी गई है। कार्यकुशलता के आधार पर भी नगर निगम की कामकाजी महिलाओं की पुनः तीन वर्गो में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम कुशल श्रमिक के रूप में कामकाजी महिलाएँ, द्वितीय अर्धकुशल श्रमिक के रूप में कामकाजी महिलाएँ, तीसरी श्रेणी में अकुशल संवर्ग की कामकाजी महिलाओं को शामिल किया गया है।

निष्कर्ष

अतः शोध अध्ययन की प्रासंगिकता से सम्बन्धित तैयार प्रश्नावली के आधार पर लिये गये साक्षात्कार से स्पष्ट हुआ कि रीवा नगर निगम में सबसे अधिक सोचनीय स्थिति असंगठित क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं की पायी गई है। अधिकांश कामकाजी महिलाएँ अस्थायी व दिहाड़ी के रूप में कार्य में संलग्न ज्ञात हुई है जिससे नियोक्ता द्वारा आधारभूत सुविधाओं के अभाव में कामकाजी महिलाओं को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः गन्दे आवास एवं कुपोषण के कारण अनेक बीमारियों का शिकार होती है।

सन्दर्भ

1. रावत, ज्ञानेन्द्र 2006 (पुनर्मुद्रित 2009), औरत एक समाजशास्त्री अध्ययन, विश्व भारती पब्लिकेशन, 4378/4 बी., अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 207
2. रावत, ज्ञानेन्द्र 2006 (पुनर्मुद्रित 2009), औरत एक समाजशास्त्री अध्ययन, विश्व भारती पब्लिकेशन, 4378/4 बी., अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 209
3. गुप्ता, पंकज (2014), मानवाधिकार व महिलाएँ, साहित्यागार पब्लिकेशन, धामाड़ी मार्केट, जयपुर राजस्थान।